प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

पांच खण्डों में होगी महाप्रज्ञ की आत्मकथा
जल्द आएगा आत्मकथा का दूसरा खण्ड

सरदारशहर 14 जुलाई , 2010

91वीं जयन्ती पर विमोचित होने वाली आचार्य महाप्रज्ञ की आत्मकथा 'यात्रा एक अकिंचन की' विभिन्न शीर्षकों के साथ पांच खण्डों में प्रकाशित होगी। मुनि जयंत कुमार के अनुसार आचार्यश्री महाप्रज्ञ की आत्मकथा का दूसरा खण्ड मैं और मेरा गुरु शीर्षक से जल्द ही पाठकों के हाथों में पहुंचेगा। इसका उल्लेख स्वयं आत्मकथा के सम्पादक मुनि धनजंय कुमार ने अपने संपादकीय में किया है। इस खण्ड का अधिकांश लेखन आचार्य महाप्रज्ञ ने स्वयं करवाया है। दूसरे खण्ड में गुरु के साथ तादात्मय भाव के रहस्य पर प्रकाश डाला है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने खोला आत्मकथा में अपनी साधना का राज

पीछले ही दिनों विमोचित होने वाली आचार्य महाप्रज्ञ की आत्मकथा चर्चा का केन्द्र बनी हुई है। इस आत्मकथा 'यात्रा एक अकिंचन की' में आचार्य महाप्रज्ञ ने भोले भाले नथमल से किस तरह विश्वविख्यात महाप्रज्ञ की यात्रा में किन मंत्रों की साधना की इसका राज भी उद्घाटित किया है। मुनि जयंतकुमार के अनुसार इस आत्मकथा में आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने उन ध्यान के प्रयोगों एवं मंत्रों को सम्मलित किया है जिसकी साधना करने से स्वयं की मेधा तीव्र बन गई थी और दार्शनिक जगत में एक विशिष्ट पहचान बनी थी। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने इस बात को भी सहज भाव से स्वीकार किया है कि मैं मुनि क्यों बना यह मुझे ज्ञात नहीं, उन्होंने अपने मुनि बनने के पीछे लिनयती को कारण माना है। आत्मकथा में आचार्य महाप्रज्ञ ने जीवन में आये संघर्षों का उल्लेख भी किया है। उन्होंने अपने गुरु के महाप्रयाण के के बाद अपनी मनोदशा का नियंत्रण भी हुबहू प्रस्तुत किया है।

विश्वस्त सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार आत्मकथा को प्राप्त करने की होड़ पाठकों में हैं। आचार्य महाप्रज्ञ के द्वारा साधना किये गये मंत्रों का जप कर अपने आपकों भी तीव्र मेधा वाला बनाने के इच्छुक पाठक आत्मकथा को जल्द से जल्द पढ़ लेना चाहते हैं। पाठकों को सुलभता से आत्मकथा प्राप्त हो जाये इसका ख्याल जैन विश्व भारती प्रकाशन विभाग द्वारा रखा जा रहा है।

– शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)